

अगर भारत

संपादकीय

जेन-जी आंदोलन का अस्तर न्यायपालिका पर?

जंतर मंतर पर हुए जेन-जी आंदोलन का असर पहले जेन-अल्फा पर देखने को मिला है। इसके बाद बाद जिस तरह से न्यायपालिका के बारे में युवा मुखर होकर अपनी बात सोशल मीडिया पर कहने लगे हैं, उससे अंदेशा है कि न्यायपालिका भी निशाने पर आ गई है। कॉर्करोच शब्द पहली बार सुप्रीम कोर्ट के अंदर से ही निकला था। यह मामला इतना बड़ा हो जाएगा, इसे ना तो सरकार ने सोचा था ना ही न्यायपालिका ने सोचा था, लेकिन जिस तरह से बिना किसी डर और भय के सोशल मीडिया के माध्यम से युवा अपनी बात कह रहे हैं। इसका असर देश के सभी वर्गों पर पड़ रहा है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश उज्जवल भुइयां द्वारा न्यायपालिका में कॉलेजियम की कार्यप्रणाली को लेकर तीखे सवाल किए गए हैं। उसके बाद से यह मामला भी तूल पकड़ने लगा है। सुप्रीम कोर्ट अथवा न्यायपालिका में कॉलेजियम द्वारा पहले जजों की नियुक्ति के समय जो अनुशंसा की जाती थीं, उसके कारण भी कॉलेजियम में बताए जाते थे। लेकिन पिछले कुछ समय से कॉलेजियम में जो अनुशंसा की जा रही है उनमें चयन का आधार और उसके कारणों की स्पष्टता नहीं होने से सरकार और सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश द्वारा जो निर्णय जजों की नियुक्ति के लिए लिए जा रहे हैं उनकी पारदर्शिता और निष्पक्षता पर सुप्रीम कोर्ट में ही सवाल उठने शुरू हो गए हैं। पिछले कुछ समय से सरकार कॉलेजियम की अनुशंसा को दरकिनार करते हुए मनमाने तरीके से जजों की नियुक्ति हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में कर रही है। कई जजों की वरिष्ठता को नजर अंदज करते हुए तथा ट्रांसफर पोस्टिंग के माध्यम से जजों को सीनियर से जूनियर बनाने और अपने इच्छित व्यक्ति को जज बनाने के लिए कॉलेजियम और सरकार के बीच में जो सांठ-गांठ हो रही है उसके बारे में अब सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ जज भी खुलकर बोलने लगे हैं। कॉलेजियम में शामिल जजों द्वारा जो डीसेंट नोट दिया जाता था उसे भी सार्वजनिक नहीं किए जाने पर जस्टिस नागरत्ना द्वारा आपत्ति जताई गई थी, लेकिन उनकी आपत्ति को दरकिनार करते हुए जजों की नियुक्ति मनमाने तरीके से हो रही है। इसको लेकर अब सुप्रीम कोर्ट के सीनियर जजों के बीच में जिस तरह की मुश्कलात के साथ अपनी बात कही जा रही है न्यायपालिका में पारदर्शिता और निष्पक्षता को लेकर अब खुद न्यायपालिका के अंदर से आवाज उठ रही है।

न्यायपालिका का जो डर और भय था लगता है जेन-जी और जेन-अल्फा द्वारा बिना किसी डर और भय के जिस तरह से सड़कों पर आकर अपनी बात कही जा रही है उसने सभी वर्गों का डर और भय निकालने का काम किया है। देशभर में चारों ओर से निष्पक्षता की बात होने लगी है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में दो तरह के फैसले और दो तरह के कानून को लेकर जो धारणा बनी है उसको लेकर अब देश भर में न्यायपालिका के प्रति भी आक्रोश देखने को मिलने लगा है। न्यायपालिका के प्रति पहले जो विश्वास राजनीतिक दलों और आम जनता के बीच में देखने को मिलता था अब वह देखने को नहीं मिल रहा है। सरकार भी बार-बार कहती है, यदि सरकार का फैसला पसंद नहीं है तो कोर्ट चले जाओ, कोर्ट से वही फैसला आता है जो सरकार का बचाव करता है। कई राज्य सरकारों को केवल इसलिए गिरा दिया गया कि उनका फैसला समय पर नहीं हुआ। कई मामले आज भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित पड़े हुए हैं। जो मौलिक अधिकारों और संविधान से जुड़े हुए थे, चुनाव आयुक्त की नियुक्ति को लेकर भी मामला पिछले 2 साल से लंबित पड़ा हुआ है। एसआईआर के मामले में भी चुनाव आयोग को न्यायपालिका का जो सर्वेक्षण मिला है, उसको लेकर तरह-तरह की धारणा न्यायपालिका के प्रति आमजनों के बीच भी बनने लगी है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा यह कहना की लाखों मतदाताओं के नाम यदि मतदाता सूची में नहीं है वह इस बार वोट नहीं दे पा रहे हैं, तो ट्रिब्यूनल से फैसला होने के बाद अगली बार वोट दे देंगे। अभी तक एसआईआर के माध्यम से लोकसभा चुनाव के समय जो मतदाता सूची थी उसमें से करीब 6 करोड़ मतदाताओं के नाम काटे जा चुके हैं।

राष्ट्रकति मैथिलीशरण गुप्त: हिंदी की आत्मा राष्ट्र चेतना के अमर गायक और खड़ी बोली के महान शिल्पी

हिंदी साहित्य के इतिहास में कुछ नाम ऐसे हैं जिन्होंने केवल शब्दों की रचना नहीं की बल्कि एक युग का निर्माण किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ऐसे ही महाकवि थे, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, भारतीय संस्कृति, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनकी कविताओं ने गुलामी की बेड़ियों में जकड़े भारत में स्वतंत्रता का भाव जगाया, लोगों को अपने गौरवशाली अतीत से परिचित कराया और भविष्य के लिए नई आशा का संदेश दिया। यही कारण है कि उनकी जयंती 3 अगस्त को प्रतिवर्ष कवि दिवस के रूप में मनाई जाती है। यह केवल एक कवि का जन्मदिन नहीं बल्कि हिंदी भाषा, साहित्य और भारतीय सांस्कृतिक चेतना का उत्सव है। मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 को उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के चिरवार में एक समृद्ध वैश्य परिवार में हुआ था। उनके पिता सेठ रामचरण स्वयं साहित्य और काव्य के प्रेमी थे। परिवार के इसी साहित्यिक वातावरण ने बालक मैथिलीशरण के मन

में कविता के प्रति रुचि पैदा की। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। उन्होंने हिंदी के साथ-साथ संस्कृत, बांग्ला और मराठी का भी गंभीर अध्ययन किया। बाल्यकाल में वे ब्रजभाषा में कलकलता नाम से कविताएं लिखते थे। बाद में रसिकेश, रसिकेंद्र, मधुप, भारतीय और नित्यानंद जैसे उपनामों का भी प्रयोग किया। साहित्य जगत उन्हें स्नेहपूर्वक ददा कहकर पुकारता था।

मैथिलीशरण गुप्त के साहित्यिक जीवन में सबसे बड़ा मोड़ तब आया जब उनका संपर्क हिंदी के महान विद्वान और सरस्वती पत्रिका के संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ। द्विवेदी ने उन्हें ब्रजभाषा छोड़कर खड़ी बोली में लिखने के लिए प्रेरित किया। उस समय खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता था, लेकिन गुप्त जी ने अपनी प्रतिभा से इसे इतना प्रभावशाली बना दिया कि वही आधुनिक हिंदी कविता की प्रमुख भाषा बन गई। आज हिंदी साहित्य में खड़ी बोली की जो प्रतिष्ठ है, उसमें मैथिलीशरण गुप्त का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण

माना जाता है।

उनकी रचनाओं का सबसे बड़ा गुण यह था कि वे सरल, सहज और जनभाषा में थीं। उनकी कविताएं सामान्य पाठक भी आसानी से समझ सकता था, लेकिन उनमें निहित विचार अत्यंत गहरे और प्रेरणादायक होते थे। उनकी प्रसिद्ध पंक्तियां—
‘नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो,
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।’
आज भी हर पीढ़ी को कर्म, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का संदेश देती हैं।

मैथिलीशरण गुप्त की सबसे प्रसिद्ध कृति भारत-भारती वर्ष 1912 में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रमें का घोषणापत्र बन गई। इस कृति में भारत के गौरवशाली अतीत, तत्कालीन दयनीय वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य की कल्पना का अद्भुत चित्रण मिलता है। इसकी कविताएं

प्रभात फेरियों, विद्यालयों, राष्ट्रीय आंदोलनों और जनसभाओं में गाई जाती थीं। इस रचना ने देशवासियों के मन में स्वाधीनता की अलख जगाई और उन्हें अपने राष्ट्र के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी। इसी कालजयी कृति के प्रभाव से महात्मा गांधी ने उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की।

राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय संस्कृति और नारी चेतना को भी अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। उस समय जब साहित्य में स्त्रियों की उपेक्षा होती थी, तब उन्होंने रामायण, महाभारत और बौद्ध साहित्य की उपेक्षित लेकिन महान महिलाओं को अपनी रचनाओं की नयिका बनाया। उनका महाकाव्य साकेत इसकी सबसे बड़ी मिसाल है। इसमें राम कथा के बजाय लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के त्याग, धैर्य और विरह को केंद्र में रखा गया है। उर्मिला के मौन बलिदान को जिस संवेदनशीलता से उन्होंने चित्रित किया, वह हिंदी साहित्य में अद्वितीय माना जाता है।

इसी प्रकार यशोधरा में उन्होंने गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा के मन की वेदना, आत्मसम्मान और त्याग

को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। विष्णुप्रिया में चैतन्य महाप्रभु की पत्नी के जीवन की करुणा और समर्पण का चित्रण मिलता है। इन रचनाओं ने सिद्ध किया कि मैथिलीशरण गुप्त केवल राष्ट्रकवि ही नहीं बल्कि मानवीय संवेदनाओं के भी अप्रतिम शिल्पी थे।

उनकी प्रसिद्ध पंक्तियां—
अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी,
अचल में है दूध और आंखों में पानी।

भारतीय समाज में स्त्री की पीड़ा और उसके त्याग को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं। आज भी ये पंक्तियां समाज को आत्ममंथन के लिए विवश करती हैं।

मैथिलीशरण गुप्त ने अपने साहित्य में केवल राष्ट्रवाद का ही नहीं बल्कि सामाजिक सुधार, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक मूल्यों और मानवीय एकता का भी संदेश दिया। उनकी रचनाओं पंचवटी, जयद्रथ-वध, द्वारप, जय भारत, इंकार, गुरुकुल, काबा और कर्बला, किसान, नहुष तथा शक्ति में भारतीय संस्कृति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रभावित है।
महंगाई के संबंध में चिंताओं ने वैश्विक वित्तीय बाजारों को प्रभावित किया है।ऊंची अमेरिकी बॉन्ड यील्ड का भारत पर प्रभाव तीन प्रमुख माध्यमों से पड़ सकता है। पहला, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक भारतीय शेयर और बॉन्ड बाजार से धन निकालकर अमेरिकी परिसंपत्तियों की ओर जासकते हैं। दूसरा, डॉलर मजबूत होने पर रुपये पर दबाव बढ़ सकता है। तीसरा, भारत में सरकारी और कॉर्पोरेट उधारी की लागत बढ़ सकती है। 31 जुलाई 2026 को भारत की 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड यील्ड लगभग 6.81 प्रतिशत के आसपास रही, जो यह दर्शाती है कि घरेलू बॉन्ड बाजार भी वैश्विक ब्याज दरों, तेल कीमतों और विदेशी निवेश प्रवाह से प्रभावित है।

साथियों,फिर भी भारत की स्थिति कई अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अपेक्षाकृत मजबूत दिखाई देती है। भारत के पास बड़ा घरेलू उपभोक्ता बाजार,युवा जनसंख्या,डिजिटल भुगतान प्रणाली, तेजी

की विविधता, आध्यात्मिकता और सामाजिक समरसता का अद्भुत चित्रण मिलता है। वे मानते थे कि भारत की शक्ति उसकी सांस्कृतिक विविधता और नैतिक मूल्यों में निहित है।

उनकी एक और अमर पंक्ति—
जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें रूखदेश का प्यार नहीं।

देशभक्ति की भावना को अत्यंत सरल और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। यही कारण है कि उनकी कविताएं स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं।

मैथिलीशरण गुप्त केवल साहित्यकार ही नहीं बल्कि सार्वजनिक जीवन से भी जुड़े रहे। वर्ष 1952 से 1964 तक वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे। संसद में भी उन्होंने भारतीय भाषा, संस्कृति और शिक्षा के विकास से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया।

सम्पादीय

सावन: शिव भक्ति, श्रद्धा और साधना का पावन पर्व



शिव पूर्ण मौन, ध्यान और साक्षीभाव के प्रतीक हैं।उनका तांडव जीवन की ऊर्जा और परिवर्तन का प्रतीक है। वे संसार से भागने वाले नहीं, बल्कि संसार में रहते हुए पूर्ण जागरूकता का संदेश देते हैं।शिव केवल एक देवता नहीं, बल्कि चेतना, कल्याण, मौन, योग और आत्मबोध के सर्वोच्च प्रतीक हैं। वे देवों के देव- महादेव हैं।भक्ति परंपरा उन्हें महादेव और परमेश्वर मानती है। वहीं पर योग परंपरा उन्हें आदियोगी मानती है। दार्शनिक परंपरा उन्हें परम चेतना या ब्रह्म का प्रतीक मानती है। शिव स्वयंभू (जो स्वयं प्रकट हुए हों) हैं।

हम सभी यह जानते हैं कि सावन में शिवलिंग पर जल और बेलपत्र चढ़ाने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं, लेकिन यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर सावन मास में ही भगवान शिव का जलाभिषेक क्यों होता है ? तो यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि सावन के महीने में ही समुद्र मंथन हुआ था, जिसमें से महाविनाशकारी हलाहल विष निकला था। कहते हैं कि जब महादेव ने सृष्टि की रक्षा के लिए इस विष को अपने कंठ में धारण किया, तो उनके शरीर का तापमान अत्यधिक बढ़ गया और कंठ नीला पड़ गया और वे नीलकंठ कहलाए। विष की ज्वाला और ताप को शांत करने के लिए सभी देवताओं ने भगवान शिव को जल और औषधियां अर्पित कीं। वास्तव में,सावन की वर्षा और जल चढ़ाने की परंपरा इसी घटना

से जुड़ी है ताकि महादेव के शरीर को शीतलता मिले। सावन का महीना रुद्र रूप के उस पक्ष को दर्शाता है जो संहार के बाद पुनर्गठन और नवजीवन लाता है। शास्त्रों के अनुसार, भीषण गर्मी से जब हमारी पृथ्वी तप रही होती है,तो सावन में जब शिवजी जल ग्रहण करते हैं, तो वे प्रसन्न होकर पृथ्वी पर वर्षा के रूप में अपनी कृपा बरसाते हैं।वायु पुराण के अनुसार, सावन के दौरान जल की हर बूंद में रुद्र का अंश माना जाता है, जो प्रकृति का पुनर्जन्म करता है।यह भी मान्यता है कि सावन में भगवान शिव ही सृष्टि का भार संभालते हैं, जैसा कि आषाढ़ शुक्ल एकादशी (देवशयनी एकादशी) को भगवान विष्णु चार महीने के लिए योगनिद्रा (क्षीरसागर) में चले जाते हैं। सावन के महीने में महादेव पृथ्वी लोक के सबसे करीब होते हैं और अपने भक्तों की पुकार तुरंत सुनते हैं। सावन मास में भगवान शिव को बेलपत्र अर्पित किया जाता है। दरअसल ,बेलपत्र का त्रिकोण और वैज्ञानिक पहलू है। बेलपत्र के तीन पते शिवजी के तीन नेत्रों, तीन गुणों (सत्व, रज, तम) और त्रिवेद (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का प्रतीक हैं। बेलपत्र में प्राकृतिक रूप से विषैले तत्वों को सोखने और शीतलता प्रदान करने के गुण होते हैं। यही कारण है कि विष के प्रभाव को कम करने के लिए जल के साथ-साथ बेलपत्र भी अर्पित किया गया था। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि लोग सावन के सोमवार को

केवल एक वार मानकर व्रत रखते हैं, लेकिन सोम का अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है। सोम का मतलब है चन्द्रमा और हम सभी जानते हैं कि भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा विराजमान हैं, जो मन की शांति और शीतलता का प्रतीक हैं।सावन मास में कांवड़ यात्रा का भी विशेष महत्व माना गया है, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि पहली कांवड़ यात्रा भगवान परशुराम जी ने की थी। उन्होंने पहली बार कांवड़ में गंगाजल लाकर भगवान शिवजी का अभिषेक किया था। एक अन्य कथा के अनुसार, लंकापति रावण (जो शिवजी का महान भक्त था) ने समुद्र मंथन के विष से पीड़ित शिवजी को राहत देने के लिए पुरा महादेव (गढमुक्तेश्वर/वागपत) में कांवड़ से गंगाजल लाकर चढ़ाया था।

अंत में यही कहूंगा कि सावन केवल धार्मिक रीती-रिवाजों का महीना नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, भक्ति और स्वयं के भीतर की ऊर्जा को संतुलित करने का एक सूक्ष्म आध्यात्मिक विज्ञान है।सावन का महीना आत्मशुद्धि, संयम, प्रकृति-प्रेम और लोककल्याण का भी संदेश देता है। सावन हमें सिखाता है कि शिव की भक्ति का वास्तविक अर्थ सत्य, करुणा, सेवा, धैर्य और आत्मसंयम को जीवन में अपनाना है। यदि हम इन मूल्यों को अपने आचरण का हिस्सा बना लें, तो यही सावन का सबसे बड़ा फल और भगवान शिव के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

नेपाल में भी मजहबी कडरपथियों ने भड़काई सांप्रदायिक हिंसा ?

नेपाल नेपाल के दक्षिणी हिस्से मधेस और कोशी प्रांत में कांवड़ बोलबम यात्रा और मुहर्रम के लाउडस्पीकर विवाद को लेकर भड़की सांप्रदायिक हिंसा में अब तक 3 लोगों की मौत होना बिगड़ते हालात को बयान करता है यहा भी कट्टरपंथी मजहबी तत्व सिर उठाने लगे हैं । तनाव को देखते हुए सुनसरी, सिरहा, सर्लाही और जनकपुर सहित 6 से अधिक शहरों में अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लगा दिया गया है और स्थिति को काबू में करने के लिए नेपाली सेना को जमीन पर उतार दिया गया है। इस ताजा हिंसा के मामले चिंता बढ़ाने वाले है। नेपाल के सुनसरी जिले से शुरू हुई सांप्रदायिक हिंसा अब कई जिलों तक फैल चुकी है। तीन लोगों की मौत, कई जिलों में कर्फ्यू और सरकार की कार्रवाई पर उठ रहे सवालो के बीच जानिए आखिर नेपाल में क्या हो रहा है? हिंसा की शुरुआत और कारण लाउडस्पीकर और झंडे का विवाद: हिंसा की शुरुआत 26 जुलाई की रात सुनसरी जिले के देवानगंज (कसानगंज क्षेत्र) से हुई। वहां एक पक्ष की ओर से बोलबम यात्रा की तैयारी चल रही थी और दूसरे पक्ष का भी धार्मिक कार्यक्रम था। डीजे पर तेज संगीत बजाने और धार्मिक झंडे लगाने को लेकर दोनों समुदायों के बीच कहासुनी हुई, जिसने देखते ही देखते हिंसक झड़प का रूप ले लिया। हालात इतने बिगड़ गए कि कई इलाकों में अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लगाया पड़ा, पुलिस को गोली चलानी पड़ी और अब तक तीन लोगों की मौत हो चुकी है। हिंसा के बाद नेपाल सरकार की भूमिका भी सवालों के घेरे में है। सुरक्षा विशेषज्ञों, विपक्ष और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का आरोप है कि समय रहते राजनीतिक और प्रशासनिक हस्तक्षेप नहीं होने से हालात बेकाबू हो गए। पथराव और आगजनी: उपद्रवियों ने कई दुकानों, वहांओं और सरकारी संंपत्तियों में तोड़फोड़ कर उठे आग के हवाकरी फैल दिया। हताहत और वर्तमान स्थितितीन मौतें: पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हुई झड़पों और फायरिंग में अब तक तीन लोगों (ओम प्रकाश मेहता, जय प्रकाश मेहता और गणेश यादव) की मौत हो चुकी है। कर्फ्यू और सेना की तैनाती: सुनसरी और सिरहा के गोलबाजार, लहान, इनरवाा और जनकपुर जैसे संवेदनशील इलाकों में सेना पर्यंग मार्च कर रही है और हेलिकॉप्टर से भी निगरानी रखी जा रही है। नेपाल सरकार की अपील: नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल और काटमांडू के मेयर बालेंद्र शाह ने देश के नाम संदेश जारी कर लोगों से सामाजिक सोहार्द और शांति बनाए रखने की अपील की है। भारत सीमा पर हाई अलर्टनेपाल के ये हिंसा प्रभावित जिले भारत के बिहार राज्य की सीमा से सटे हुए हैं। सुरक्षा चिंताओं को देखते हुए भारत-नेपाल बॉर्डर पर हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। सीमा सुरक्षा बल (एसएसबी) और स्थानीय पुलिस अतिरिक्त चौकसी बरत रही है तथा सीमा पार आने-जाने वाले लोगों की सघन जांच की जा रही है।

